ख़ुतबा-ए-मिना

हज के मौक़े पर मिना के मैदान में इमाम हुसैन (अ) का एक अहम ख़ुतबा

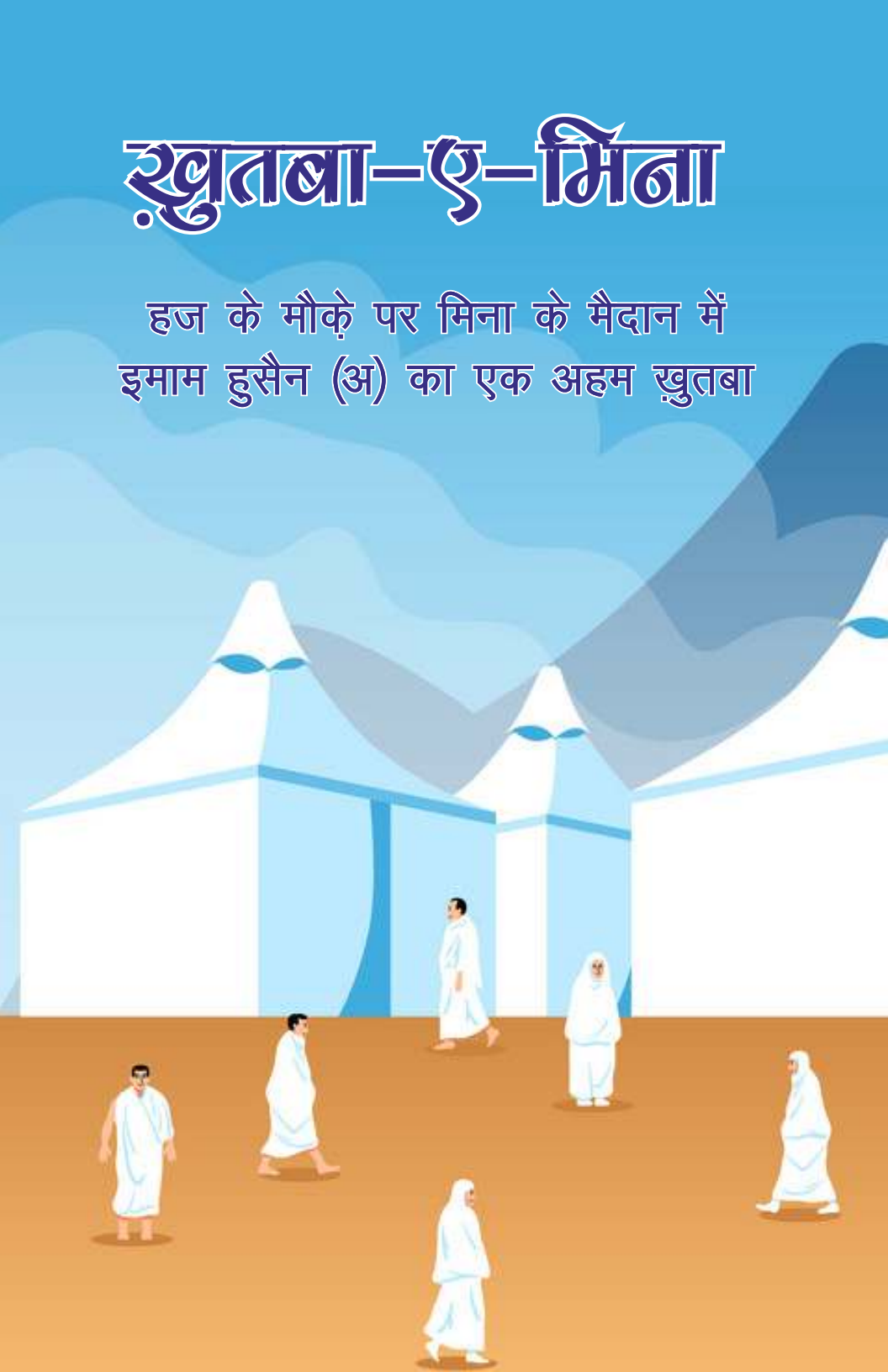

ख़ुतबा-ए-मिना

हज के मौक़े पर मिना के मैदान में इमाम हुसैन (अ) का एक अहम ख़ुतबा

Publisher:
I.Y.O. PUBLICATIONS
Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320
117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559
www.imamiayouth.in

किताब का नाम : खुतबा ए मिना

तालीफ़, तरतीब और तरजुमा : आई. वाई. ओ. टीम

कम्पोज़िंग व डिज़ाइन : इमामिया पब्लिकेशन डिविज़न

प्रकाशक : आई. वाई. ओ. पब्लिकेशन

संस्करण : सितम्बर 2023

क़ीमत :

बिस्मिही तआला

लोग दुनिया के ग़ुलाम हैं और दीन
उनकी ज़बान का मज़ा है, वो अपने
दुनियावी मक़सद को पूरा करने के
लिए दीन को इस्तेमाल करते हैं,
अगर किसी बला और मुश्किल के
ज़रिए उनका इम्तिहान लिया जाए
तो दीनदार लोगों की तादाद उंग्लियों
पर गिनने के बराबर होगी।

—— हज़रत इमाम हुसैन (अ)

(बिहारुल अनवार जिल्द : 44, सफ़हा : 383)

लब्बैक
या
हुसैन

(अलैहिस्सलाम)

बिस्मिही तआला

खुतबा–ए–मिना

(हज के मौक़े पर मिना के मैदान में इमाम हुसैन (अ) का एक अहम खुतबा)

मुआवीया की वफ़ात से एक साल पहले इमाम हुसैन इब्ने अली (अ) ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास और अबदुल्लाह इब्ने जाफ़र के साथ हज का फ़रीज़ा अंजाम दिया। इमाम हुसैन (अ) ने बनीहाशिम और अंसार के कुछ ऐसे लोगों को चुना जो आप और आपके खानदान के रुतबे को पहचानते थे। और उन्हें एक जगह जमा क्या। उस के बाद कुछ लोगों को भेजा कि पैग़म्बरे अकरम(स) के सहाबा में से जो भी इस साल हज का फ़रीज़ा अंजाम देने के लिए आए हैं उन्हें मेरे पास बुला लाएँ।

इस दावत पर तक़रीबन 700 से ज़्यादा लोग, जिनमें से अक्सर ताबईन थे और तक़रीबन 200 अस्हाब ए पैग़म्बरे अकरम (स) मिना के एक ख़ेमे में जमा हो गए। इमाम हुसैन (अ) उनके सामने खुतबा देने के लिए खड़े हुए।

'ख़ुतबे का पहला हिस्सा'

अल्लाह की हम्द व सना और मुहम्मद व आले मुहम्मद पर दुरूद व सलाम के बाद इमाम हुसैन (अ) ने लोगों को

मुख़ातिब करते हुए कहाः इस सरकश शख़्स (मुआवीया) ने हमारे और हमारे शियों के बारे में ऐसे आमाल की इजाज़त दी जो तुमने देखी और समझी और तुम गवाह भी हो। मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ अगर मैंने सच कहा तो मेरी तसदीक़ करो और अगर मैं झूठा हूँ तो मुझे झुठला दो, मैं तुम्हें खुदा के हक़ की और रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के हक़ की और तुम्हारे रसूल से मेरी क़राबत के वास्ते से क़सम देता हूँ कि जब यहां से (तुम) अपने यहाँ पहुँचना तो अपने अपने क़बीले के लोगों में से जिन पर तुम को भरोसा हो उनको बुलाकर मेरी ये तक़रीर सुनाना क्योंकि मुझे डर है कि ये मुआमला छोड़ दिया जाएगा और हक़ बरबाद और कमज़ोर हो जाएगा। ख़ुदा अपने नूर को मुकम्मल करता है। चाहे वो काफ़िरों को पसंद न हो।

इसके बाद इमाम हुसैन (अ) ने फ़रमायाः

(1) तुम्हें खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम नहीं जानते हो कि जब रसूल अल्लाह ने अपने अस्हाब के दरमयान भाईचारे का रिश्ता कायम किया तो उस वक़्त हज़रत मुहम्मद (स) ने अली इब्ने अबी तालिब (अ) को अपना भाई क़रार दिया था और फ़रमाया था कि दुनिया और आख़िरत में तुम मेरे और मैं तुम्हारा भाई हूँ। लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(2) फ़रमायाः तुम्हें खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम जानते हो कि रसूल अल्लाह (स) ने अपनी मस्जिद और अपने घरों के लिए जगह ख़रीदी। फिर मस्जिद तामीर की और इस में दस घर बनाए। नौ घर अपने लिए और दसवाँ घर मेरे वालिद के लिए रखा। फिर मेरे वालिद के दरवाज़े के सिवा

मस्जिद की तरफ़ खुलने वाले तमाम दरवाज़े बंद करवा दिए। और जब एतराज़ करने वालों ने एतराज़ किया तो फ़रमाया मैंने तुम्हारे दरवाज़े बंद नहीं किए और अली का दरवाज़ा खुला रखा, बल्कि अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हारे दरवाज़े बंद करूँ और उन का दरवाजा खुला रखूं। इस के बाद नबी ए अकरम ने अली के सिवा तमाम अफ़राद को मस्जिद में सोने से मना फ़रमाया?

लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(3) फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम है कि उमर बिन ख़त्ताब को बड़ी ख़ाहिश थी कि उनके घर की दीवार में एक आँख के बराबर सुराख़ रहे जो मस्जिद की तरफ़ खुलता हो लेकिन नबी ने उन्हें मना कर दिया। और ख़ुत्बे में इरशाद फ़रमाया अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि पाक–ओ–पाकीज़ा मस्जिद बनाऊँ लिहाज़ा मेरे, मेरे भाई अली और उनकी औलाद के सिवा कोई और शख़्स मस्जिद में नहीं रह सकता। लोगों ने कहा बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(4) फ़रमायाः तुम्हें खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल–ए–ख़ुदा (स) ने ग़दीरे खुम के दिन अली (अ) को बुलंद किया और उनकी विलाएत का ऐलान किया। और कहा कि यहां हाज़िर लोग इस वाक़्ये की इत्तिला यहां ग़ैर मौजूद लोगों तक पहुंचा दें? लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(5) फ़रमायाः तुम्हें खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या

तुम्हारे इल्म में है कि रसूल अल्लाह (स) ने ग़ज़वा ए तबूक के मौक़े पर अली (अ) से फ़रमाया तुम मेरे लिए ऐसे ही हो जैसे मूसा के लिए हारून और फ़रमाया तुम मेरे बाद तमाम मोमिनों के वली और सरपरस्त होगे। लोगों ने कहा बारे इलाहा ! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(6) फ़रमायाः तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि जब रसूल अल्लाह (स) ने नजरान के ईसाईयों को मुबाहले की दावत दी, तो अपने साथ, सिवाए अली (अ), उनकी ज़ौजा और उनके दो बेटों के किसी और को नहीं लेकर गए? लोगों ने कहाः बार इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(7) फ़रमायाः तुम्हें खुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम जानते हो कि रसूल अल्लाह (स) ने जंगे ख़ैबर के दिन लश्कर ए इस्लाम का पर्चम हज़रत अली (अ) को दिया और फ़रमाया कि मैं पर्चम उस शख़्स को दे रहा हूँ जिससे अल्लाह और उसके रसूल मुहब्बत करते हैं और वो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है। ऐसा हमला करने वाला कर्रार है कि कभी पलटता नहीं है यानी ग़ैरे फ़र्रार है और खुदा ख़ैबर के क़िले को इस के हाथों फ़तह करवाएगा। लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(8) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल अल्लाह ने अली को सूरह ए बराअत देकर भेजा और फ़रमाया कि मेरा पैग़ाम पहुंचाने का काम खुद मेरे या ऐसे शख़्स के इलावा जो मुझसे हो कोई और अंजाम नहीं दे सकता। लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(9) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल अल्लाह को जब कभी कोई मुश्किल पेश आती थी तो वो हज़रत अली पर अपने ख़ास भरोसे की वजह से उन्हें आगे भेजते थे और कभी उन्हें उनके नाम से नहीं पुकारते थे, बल्कि ए मेरे भाई कह कर मुख़ातिब करते थे। लोगों ने कहा बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(10) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल अल्लाह ने अली, जाफर और ज़ैद के दरमियान फ़ैसला सुनाते वक़्त फ़रमायाः ऐ अली! तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ और मेरे बाद तुम तमाम मोमिनों के वली और सरपरस्त होगे। लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(11) फ़रमाया क्या आप जानते हैं कि वो (हज़रत अली) हर–रोज, हर शब तन्हाई में रसूले खुदा से मुलाक़ात करते थे। अगर अली सवाल करते तो नबी ए अकरम उस का जवाब देते और अगर अली ख़ामोश रहते तो नबी खुद से गुफ़्तगू का आग़ाज करते। लोगों ने कहाः बार इलाहा! हम तुझे गवाह बनाकर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(12) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल–ए–खुदा (स) ने इस मौक़े पर हज़रत अली को जाफर ए तय्यार और हमज़ा सय्यदुश शुहादा पर फज़ीलत दी, जब हज़रत फ़ातिमा से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया मैंने अपने ख़ानदान के बेहतरीन शख़्स से तुम्हारी शादी की है, जो सबसे पहले इस्लाम लाने वाला, सबसे ज़्यादा नर्म–दिल और माफ़ करने वाला और सबसे बढ़कर इलम–व–फज़ल का मालिक है। लोगों ने कहाः बारे इलाहा हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(13) फ़रमायाः क्या तुम जानते हो कि रसूल–ए–खुदा (स) ने फ़रमाया मैं तमाम औलाद–ए–आदम का सय्यद व सरदार हूँ, मेरा भाई अली अरबों का सरदार है, फ़ातिमा तमाम जन्नत की ख़वातीन की रहबर हैं और मेरे बेटे हसन–व–हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं। लोगों ने कहाः बार इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(14) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल अल्लाह ने हज़रत अली को हुक्म दिया कि वही उनके जनाज़े को ग़ुसल दें और फरमाया कि जिबरईल इस काम में उनके मददगार होंगे। लोगों ने कहाः बार इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(15) फ़रमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि रसूल अल्लाह ने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में फ़रमाया मैं तुम्हारे दरमियान दो क़ीमती अमानतें छोड़े जा रहा हूँ । अल्लाह की किताब और मेरे अहल–ए–बैत। इन दोनों को मज़बूती से थामे रहो ताकि गुमराह न हो जाओ। लोगों ने कहाः बारे इलाहा! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

(16) इस के बाद जब अमीरुल–मोमिनीन के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल इमाम की गुफ़्तगु इख़्तेताम को पहुंचने लगी तो आपने लोगों को खुदा की क़सम देकर कहा कि क्या उन्होंने रसूल अल्लाह से ये सुना है कि जो ये दावा करे कि वो मुझसे मुहब्बत करता है, जबकि अली का बुग़ज़ उस के दिल में हो तो वो झूठा है, ऐसा शख़्स जो अली से बुग़ज़ रखता हो, मुझसे मुहब्बत नहीं रखता। इस मौक़े पर किसी कहने वाले ने कहा कि या रसूल अल्लाह! ये कैसे हो सकता है? रसूल अल्लाह ने फ़रमाया क्योंकि वो अली मुझसे है और में उससे हूँ। जिसने अली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने

मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अली से दुश्मनी की उसने मुझसे दुश्मनी की और जिसने मुझसे दुश्मनी की उसने अल्लाह से दुश्मनी की । लोगों ने कहाः बारे इलाहा ! हम तुझे गवाह बना कर कहते हैं कि हाँ ऐसा ही था।

ख़ुत्बे का दूसरा और तीसरा हिस्सा

ऐ लोगो! अल्लाह तआला ने यहूदी उलमा को फटकार के अपने ख़ास बंदों को जो नसीहत की है, इस से सबक़ हासिल करो। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः यहूदी उलमा और दीनी रहनुमा उन्हें गुनाहों और हराम–ख़ोरी से क्यों नहीं रोकते? और फ़रमाया बनीइसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार क्या, उन पर लानत की गई है। यहां तक कि फ़रमाया वो एक दूसरे को बुरे आमाल करने से मना नहीं करते थे और वो कितना बुरा काम करते थे।

सच तो ये है कि अल्लाह तआला ने इस लिए उन्हें बुरा क़रार दिया है कि वो अपनी आँखों से ये देखने के बावजूद कि ज़ालिमीन खुल्लम खुल्ला बुराईयों को फैला रहे हैं, उन्हें (ज़ालिमों को) इस अमल से रोकने की कोशिश नहीं करते थे। क्योंकि उन्हें, इन ज़ालिमों की तरफ़ से मिलने वाले माल से दिलचस्पी थी और उनकी तरफ़ से पहुंचने वाली सख़्तियों से ख़ौफ़ज़दा थे। जबकि ख़ुदा कहता है कि लोगों से न डरो और मुझसे डरो। और परवरदिगार ने फ़रमाया है मोमिनीन और मोमिनात एक दूसरे के दोस्त और सरपरस्त हैं, अच्छाईयों का हुक्म देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं।

इस आयत में मोमिनीन की सिफ़ात बयान करते हुए अल्लाह तआला ने अमर बिलमारूफ़ और नही अनिलमुनकर

से शुरुआत की और उसे अपनी तरफ़ से वाजिब क़रार दिया क्योंकि परवरदिगार जानता है कि अगर अमर बिलमारूफ़ और नही अनिलमुनकर अंजाम पाए और मुआशरे में बरक़रार रखा जाये तो तमाम वाजिबात, चाहे वो आसान हों या मुश्किल, खुद–ब–खुद अंजाम पाएँगे। और इस की वजह ये है कि अमर बिलमारूफ़ और नही अनिलमुनकर का मतलब ये है कि लोगों को इस्लाम की दावत दी जाये और साथ ही मज़लूमों को उनके हुक़ूक़ लौटाए जाएं, ज़ालिमों की मुख़ालिफ़त की जाये, अवामी दौलत और माल–ए–ग़नीमत इंसाफ़ के साथ तक़सीम हो, और सदक़ात यानी ज़कात और दूसरे वाजिब और मुस्तहब मालियात को सही मुक़ामात से वसूल कर के हक़दारों पर ख़र्च किया जाये।

ऐ वो गिरोह! जो इल्म व फ़ज़ल के लिए मशहूर है, जिस का ज़िक्र नेकी और भलाई के साथ किया जाता है, वाज़–व–नसीहत के सिलसिले में आपकी शोहरत है और अल्लाह वाले होने की बिना पर लोगों के दिलों पर आपकी हैबत–व–जलाल है, यहां तक कि ताक़तवर आपसे डरते हैं और ज़ईफ़ और कमज़ोर आपका एहतिराम करते हैं, यहाँ वो शख़्स भी खुद पर आपको अहमियत देता है जिसके मुक़ाबले में आपको कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं और न ही आपका उस पर कोई ज़ोर है। जब हाजत मंदों के सवाल रद हो जाते हैं तो उस वक़्त आप ही की सिफ़ारिश काम आती है, आपको वो इज़्ज़त–व–एहतिराम हासिल है कि गली कूचों में आपका गुज़र बादशाहों के से जाह–व–जलाल और बड़े लोगों की सी अज़मत के साथ होता है। ये सब इज़्ज़त–व–एहतिराम सिर्फ़ इस लिए है कि आपसे उम्मीद की जाती है कि आप इलाही अहकाम को लागू करेंगे, हालाँकि इस सिलसिले में आपकी

कोताहियां बहुत ज़्यादा हैं। आपने इमामों के हुकूक़ को नज़रअंदाज़ कर दिया है, समाज के कमज़ोर और बे बस लागों के हक़ को बरबाद कर दिया है और जिस चीज़ को अपने ख़याल में अपना हक़ समझते थे उसका मुतालबा किया। न उस के लिए कोई माली क़ुर्बानी दी और न अपने ख़ालिक़ की ख़ातिर अपनी जान ख़तरे में डाली और न अल्लाह की ख़ातिर किसी क़ौम व क़बीले का मुक़ाबला किया। इसके बावजूद आप जन्नत में रसूल अल्लाह की हमनशीनी और अल्लाह के अजाब से अमान के ख़्वाहिशमंद हैं, हालाँकि मुझे तो ये ख़ौफ़ है कि कहीं अल्लाह का अज़ाब आप पर नाज़िल न हो, क्योंकि अल्लाह की इज़्ज़त–व–अज़मत के साये में आप इस बुलंद मुक़ाम पर पहुंचे हैं, जबकि आप खुद उन लोगों का एहतिराम नहीं करते जो मार्फ़ते खुदा के लिए मशहूर हैं जबकि आपको अल्लाह के बंदों में अल्लाह की वजह से इज़्ज़त–व–एहतिराम की नज़र से देखा जाता है। आप देखते रहते हैं कि अल्लाह से किए हुए वादों को तोड़ा जा रहा है, इसके बावजूद आप ख़ौफ़ज़दा नहीं होते, उस के बरख़िलाफ़ अपने आबाओ अज्दाद के बाज़ अह्द–व–पैमान टूटते देखकर आप लरज़ उठते हैं, जबकि रसूल अल्लाह के अह्द–व–पैमान नज़रअंदाज़ हो रहे हैं और कोई पर्वाह नहीं की जा रही। अंधे, गूँगे और अपाहिज शहरों में लावारिस पड़े हैं और कोई उन पर रहम नहीं करता। आप लोग न तो खुद अपना किरदार अदा कर रहे हैं और न उन लोगों की मदद करते हैं जो कुछ कर रहे हैं। आप लोगों ने खुशामद और चापलूसी के ज़रीये अपने आपको ज़ालिमों के ज़ुलम से बचाया हुआ है जबकि ख़ुदा ने इस से मना किया है और एक दूसरे को भी मना करने के लिए कहा है। और आप इन तमाम अहकाम को नज़रअंदाज़ किए

हुए हैं।

आप पर आने वाली मुसीबत दूसरे लोगों पर आने वाली मुसीबत से कहीं बड़ी मुसीबत है, इस लिए कि अगर आप समझें तो उलमा के आला मुक़ाम–व–मंज़िलत से आप को महरूम कर दिया गया है, क्योंकि हुकूमत करने की ज़िम्मेदारी उलमा ए इलाही के सपुर्द होनी चाहीए, जो अल्लाह के हलाल–व–हराम के अमानतदार हैं। और इस मुकाम–व–मंजिलत के छीन लिए जाने का सबब ये है कि आप हक़ से दूर हो गए हैं और वाज़ेह दलायल के बावजूद सुन्नत के बारे में इख़्तिलाफ़ का शिकार हैं।

अगर आप मुसीबत और तकलीफ़ें झेलने और अल्लाह की राह में मुश्किलात बर्दाश्त करने के लिए तैय्यार होते तो अहकाम ए इलाही लागू करने के लिए आपकी ख़िदमत में पेश किए जाते, आप ही के ज़रिये अनजाम पाते और मुआमलात में आप ही से रुजू किया जाता लेकिन आपने ज़ालिमों और जाबिरों को अपने मुक़ाम पर बिठा दिया और अल्लाह के कामों को उनके हाथों में सौंप दिया ताकि अपने अंदाज़ों और वहम व ख़याल के मुताबिक़ अमल करें और अपनी नफ़सानी ख़ाहिशात को पूरा करें।

वो हुकूमत पर क़बज़ा करने में इस लिए कामयाब हो गए क्योंकि आप मौत से डरकर भागने वाले थे और इस फ़ानी और आरज़ी दुनिया की मुहब्बत में गिरफ़्तार थे। फिर आपकी ये कमज़ोरियाँ सबब बनीं कि ज़ईफ़ और कमज़ोर लोग उनके चंगुल में फंस गए और नतीजा ये है कि कुछ तो ग़ुलामों की तरह कुचल दिए गए और कुछ मुसीबत के मारों की तरह अपनी रोज़ी–रोटी की वजह से बेबस हो गए। हुकूमत करने वाले अपनी हुकूमतों में मनमानी करते हैं और अपनी नफ़सानी

ख़्वाहिशात की पैरवी में ज़िल्लत व ख़्वारी का सबब बनते हैं, बुरे लोगों की पैरवी करते हैं और परवरदिगार के मुक़ाबले में गुस्ताख़ी दिखाते हैं।

हर शहर में उनका एक माहिर ख़तीब मिंबर पर बैठा है। ज़मीन में उनके लिए कोई रोक–टोक नहीं है और उनके हाथ खुले हुए हैं यानी जो चाहते हैं कर गुज़रते हैं अवाम उनके ग़ुलाम बन गए हैं और अपना बचाओ भी नहीं कर सकते। हाकिमों में से कोई हाकिम तो ज़ालिम, जाबिर और दुश्मनी और इनाद रखने वाला है और कोई कमज़ोरों को सख़्ती से कुचल देने वाला, इन ही का हुक्म चलता है जबकि ये न ख़ुदा को मानते हैं और न रोज़–ए–जज़ा को।

ताज्जुब है और क्यों ताज्जुब न हो मुल्क एक धोके बाज़ सितमगर के हाथ में है। इस के मालयाती ओहदेदार ज़ालिम हैं और सूबों में उसके मुक़र्रर किये हुये गवर्नर मोमिनों के लिए संग दिल और बेरहम हैं। आख़िर कार अल्लाह ही उन कामों के बारे में फ़ैसला करेगा जिनके बारे में हमारे और उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ है और वही हमारे और उनके दरमयान पेश आने वाले इख़्तिलाफ़ पर अपना हुक्म जारी करेगा।

इमाम ने अपनी बात पूरी करते हुये ये फ़रमायाः बारे इलाहा! तू जानता है कि जो कुछ हमारी जानिब से हुआ (बनी उमय्या और मुआवीया की हुकूमत की मुख़ालिफ़त में) वो न तो हुकूमत हासिल करने के लिए है और न ही ये माले दुनिया हासिल करने के लिए है बल्कि सिर्फ़ इस लिए है कि हम चाहते हैं कि तेरे दीन की निशानियों को ज़ाहिर कर दें और तेरे मुल्क में इस्लाह करें, तेरे मज़लूम बंदों को अमान मयस्सर हो और जो फ़राएज़, क़वानीन और अहकाम तू ने मुअय्यन किए हैं उन पर अमल हो। (याद रहे!) अब अगर

आप हज़रात ने हमारी मदद न की और हमारे साथ इन्साफ़ न किया तो ज़ालिम आप पर और ज़्यादा छा जाऐंगे और नूरे नुबूव्वत को बुझाने में और ज़्यादा कोशिश करने लगेंगे। हमारे लिए तो बस खुदा ही काफ़ी है, उसी पर हमने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ हमारी तवज्जोह है और उसी की जानिब पलटना है।

(किताबे सुलैम बिन क़ैस – सफ़हाः 132
इहतिजाजे तब्रसी जिल्द 2 सफ़हा 17)

आई. वाई. ओ. पब्लिकेशन बच्चों के लिए हिन्दी उर्दू और अंग्रेज़ी में तरह–तरह की दिल्चस्प और रंगीन किताबें छापता रहता है। जिन की मदद से बच्चा इस्लामी मसाएल और तौर तरीक़े आसानी से सीख जाता है और उसमें किताबें पढ़ने का शौक़ भी पैदा होता है। इसी तरह नौजवानों के लिए भी आसान हिन्दी और उर्दू में ऐसी अहम किताबें छापता है जिनकी आज नौजवानों को सख़्त ज़रूरज है। इन किताबों को बतौर ईसाले सवाब बाँट सकते हैं। ऐसा करना यक़ीनन सवाबे जारिया होगा।

Publisher:

I.Y.O. PUBLICATIONS

Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320
117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559
www.imamiayouth.in